किसान, ज़मींदार और राज्य

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» किसान और कृषि उत्पादन: बुनियादी जानकारी

प्रश्न 1 (आसान). मुग़ल काल में ग्रामीण समाज की बुनियादी इकाई क्या थी?
उत्तर – गाँव

प्रश्न 2 (आसान). मुग़ल काल के किसान के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले दो आम शब्द बताओ।
उत्तर – रैयत (रियाया) या मुज़ारियान

प्रश्न 3 (मध्यम). किसानों को 'पाहि-काश्त' क्यों बनना पड़ता था? कोई दो कारण बताओ।
उत्तर – कर (टैक्स) की बेहतर शर्तें या अकाल/भुखमरी के बाद आर्थिक परेशानी।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर कोई किसान दूसरे गाँव में जाकर खेती करता है और उसे अपनी ज़मीन का मालिकाना हक़ नहीं मिलता, तो उसे किस श्रेणी में रखा जाएगा और क्यों?
उत्तर – उसे 'पाहि-काश्त' श्रेणी में रखा जाएगा क्योंकि वह अपनी ज़मीन से दूर, दूसरे गाँव में जाकर खेती कर रहा है, अक्सर किराए पर या ठेके पर।

» सिंचाई और कृषि तकनीकें

प्रश्न 5 (आसान). मुग़ल काल में सिंचाई के दो मुख्य कृत्रिम साधन कौन से थे?
उत्तर – रहट और बाल्टियाँ।

प्रश्न 6 (आसान). बीज बोने के लिए कौन सा कृषि औज़ार इस्तेमाल होता था?
उत्तर – बरमा।

प्रश्न 7 (मध्यम). राज्य ने सिंचाई में कैसे मदद की?
उत्तर – राज्य ने कई नई नहरें खुदवाईं और पुरानी नहरों की मरम्मत करवाई।

प्रश्न 8 (कठिन). बाबरनामा के अनुसार, उत्तर भारत में किस जगह लोग रहट से सिंचाई करते थे?
उत्तर – लाहौर, दीपालपुर और ऐसी ही दूसरी जगहों पर।

» फसलों की विविधता और व्यापारिक फसलें

प्रश्न 9 (आसान). मुग़ल काल की दो मुख्य फसल ऋतुएँ कौन सी थीं?
उत्तर – खरीफ और रबी।

प्रश्न 10 (आसान). तम्बाकू भारत में किस सदी में आया?
उत्तर – 17वीं सदी में।

प्रश्न 11 (मध्यम). 'जिन्स-ए-कामिल' से आप क्या समझते हैं? कोई दो उदाहरण दीजिए।
उत्तर – 'जिन्स-ए-कामिल' का अर्थ है 'सर्वोत्तम फसलें', जो मुख्य रूप से व्यापार और नकदी कमाई के लिए उगाई जाती थीं। उदाहरण: कपास और गन्ना।

प्रश्न 12 (कठिन). मुग़ल काल में नई दुनिया (दूसरे देशों) से भारत में कौन सी महत्वपूर्ण फसलें आईं और उनका भारतीय कृषि पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – नई दुनिया से तम्बाकू, मक्का, आलू, टमाटर और मिर्च जैसी फसलें आईं। इनका प्रभाव यह पड़ा कि भारतीय कृषि में फसलों की विविधता बहुत बढ़ गई और नए खाद्य पदार्थों का प्रचलन शुरू हुआ, जैसे मक्का पश्चिमी भारत की मुख्य फसल बन गया।

» ग्रामीण समुदाय: जाति और सामाजिक संरचना

प्रश्न 13 (आसान). मुग़ल काल में 'खुद-काश्त' किसान कौन होते थे?
उत्तर – खुद-काश्त वे किसान थे जो उसी गाँव में रहते थे जहाँ उनकी ज़मीन थी और वे उस ज़मीन पर खेती करते थे।

प्रश्न 14 (आसान). पंचायत का मुखिया क्या कहलाता था?
उत्तर – पंचायत का मुखिया 'ग्राम प्रधान' या 'मुकद्दम' या 'मंडल' कहलाता था।

प्रश्न 15 (मध्यम). मुग़ल काल में 'पाहि-काश्त' किसान कौन होते थे और वे ऐसा क्यों करते थे?
उत्तर – पाहि-काश्त वे खेतिहर थे जो दूसरे गाँवों से ठेके पर खेती करने आते थे। वे अपनी मर्ज़ी से (जब उन्हें दूसरे गाँव में करों की बेहतर शर्तें मिलती थीं) या मजबूरी में (जैसे अकाल या आर्थिक परेशानी के बाद) ऐसा करते थे।

प्रश्न 16 (कठिन). जाति के अतिरिक्त, ग्रामीण समाज में भेदभाव का कोई एक अन्य कारण स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – जाति के अतिरिक्त, संपत्ति का अंतर भी ग्रामीण समाज में भेदभाव का एक प्रमुख कारण था। कुछ किसान (जैसे गुजरात में 6 एकड़ ज़मीन वाले या बंगाल में 10 एकड़ वाले) अमीर और समृद्ध माने जाते थे, जबकि अधिकांश किसानों के पास एक जोड़ी बैल या दो हल से भी कम होता था, जिससे वे गरीब और कमज़ोर वर्ग में आते थे।

» पंचायत और गाँव का मुखिया

प्रश्न 17 (आसान). मुग़ल काल में गाँव के मुखिया को किन नामों से जाना जाता था?
उत्तर – मुक़द्दम या मंडल।

प्रश्न 18 (आसान). गाँव की पंचायत में आमतौर पर कौन लोग होते थे?
उत्तर – गाँव के बुज़ुर्ग और महत्वपूर्ण लोग, जिनके पास पुश्तैनी संपत्ति के अधिकार होते थे।

प्रश्न 19 (मध्यम). पंचायत का मुखिया अपने पद पर कब तक बना रहता था?
उत्तर – मुखिया तभी तक अपने पद पर बना रहता था जब तक गाँव के बुज़ुर्गों को उस पर भरोसा था। भरोसा न होने पर वे उसे हटा सकते थे।

प्रश्न 20 (कठिन). गाँव के मुखिया के पास कौन-से न्याय संबंधी अधिकार थे, और उसका क्या उद्देश्य था?
उत्तर – मुखिया के पास जुर्माना लगाने और समुदाय से निष्कासित करने जैसे गंभीर दंड देने के अधिकार थे। इसका उद्देश्य जातिगत रिवाजों की अवहेलना को रोकना था।

» ग्रामीण दस्तकार और लेन-देन के रिश्ते

प्रश्न 21 (आसान). मुगल काल के दो प्रमुख ग्रामीण दस्तकारों के नाम बताइए।
उत्तर – कुम्हार और लोहार।

प्रश्न 22 (आसान). ग्रामीण दस्तकार अपनी सेवाओं के बदले क्या प्राप्त करते थे?
उत्तर – फ़सल का हिस्सा, ज़मीन का टुकड़ा या अनाज।

प्रश्न 23 (मध्यम). जजमानी व्यवस्था क्या थी? एक उदाहरण दीजिए।
उत्तर – जजमानी व्यवस्था एक ऐसी प्रणाली थी जहाँ ग्रामीण दस्तकार किसानों को नियमित सेवाएँ देते थे और बदले में उन्हें अनाज या ज़मीन का टुकड़ा मिलता था। यह संबंध अक्सर पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता था। उदाहरण: लोहार किसान के औज़ार ठीक करता था और बदले में उसे हर साल तय मात्रा में अनाज मिलता था।

प्रश्न 24 (कठिन). ग्रामीण दस्तकारों की भूमिका गाँव की अर्थव्यवस्था के लिए क्यों महत्वपूर्ण थी?
उत्तर – ग्रामीण दस्तकार गाँव के लिए आवश्यक चीज़ें बनाते और सेवाएँ प्रदान करते थे, जैसे कृषि औज़ार बनाना (लोहार), मिट्टी के बर्तन बनाना (कुम्हार), कपड़े धोना (धोबी) आदि। ये सेवाएँ और उत्पाद ग्रामीण जीवन और कृषि उत्पादन के लिए ज़रूरी थे, जिससे गाँव आत्मनिर्भर बनता था और बाज़ार पर निर्भरता कम होती थी। इनके बिना कृषि और दैनिक जीवन संभव नहीं था।

» कृषि समाज में महिलाएँ

प्रश्न 25 (आसान). कृषि समाज में महिलाएँ मुख्य रूप से कौन से 'खेती के काम' करती थीं?
उत्तर – बुवाई, निराई, कटाई।

प्रश्न 26 (आसान). प्रजनन शक्ति को उस समय क्यों महत्वपूर्ण माना जाता था?
उत्तर – अधिक मज़दूरों और नई पीढ़ियों के लिए।

प्रश्न 27 (मध्यम). लैंगिक पूर्वाग्रहों के कारण महिलाओं को संपत्ति के अधिकार में क्या समस्याएँ आती थीं?
उत्तर – उन्हें ज़मीन पर अधिकार कम मिलता था और संपत्ति ज़्यादातर पुरुषों के पास रहती थी।

प्रश्न 28 (कठिन). उस समय के कृषि समाज में 'दुलहन की कीमत' (bride price) का चलन क्यों था और इससे क्या पता चलता है?
उत्तर – यह प्रथा उन समाजों में प्रचलित थी जहाँ महिलाएँ श्रम बल का महत्वपूर्ण हिस्सा मानी जाती थीं। यह दर्शाता है कि महिलाओं के काम को मूल्यवान समझा जाता था, लेकिन साथ ही एक वस्तु के रूप में भी देखा जाता था।

» जंगल और कबीले: बसे हुए गाँवों से परे

प्रश्न 29 (आसान). सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में भारत का लगभग कितना प्रतिशत हिस्सा जंगल था?
उत्तर – लगभग 40%

प्रश्न 30 (आसान). जंगलों में रहने वाले लोग अपने जीवन यापन के लिए किन मुख्य गतिविधियों पर निर्भर थे?
उत्तर – जंगल के उत्पादों, शिकार और स्थानांतरीय खेती (झूम खेती) पर।

प्रश्न 31 (मध्यम). राज्य और जंगल में रहने वाले समुदायों के बीच संबंध हमेशा सीधे क्यों नहीं होते थे?
उत्तर – क्योंकि राज्य के लिए जंगल कभी-कभी 'उलट-फेर' वाले इलाके थे, जहाँ विद्रोही शरण लेते थे, या जहाँ से हाथी जैसे मूल्यवान संसाधन मिलते थे। राज्य अपनी सेना के लिए हाथी चाहता था, तो कभी व्यापार भी होता था, लेकिन कभी-कभी टकराव भी।

प्रश्न 32 (कठिन). सोचो, जंगल में रहने वाले समुदायों का जीवन बसावट वाले गाँवों से किस प्रकार भिन्न था? कोई दो मुख्य अंतर बताओ।
उत्तर – पहला अंतर: ग्रामीण लोग मुख्यतः एक जगह टिक कर खेती करते थे, जबकि जंगली लोग मौसम के हिसाब से अपनी जगह बदलते रहते थे (गतिशीलता)। दूसरा अंतर: ग्रामीण लोग राज्य को नियमित कर देते थे, जबकि जंगली लोग कभी विद्रोही होते थे या बदले में पेशकश (भेंट) देते थे, उनका संबंध राज्य से अलग था।

» ज़मींदार: ग्रामीण शक्ति संरचना

प्रश्न 33 (आसान). ज़मींदार अपनी कौन सी ज़मीन को 'मिल्कियत' कहते थे?
उत्तर – वह ज़मीन जो उनकी अपनी व्यक्तिगत संपत्ति होती थी।

प्रश्न 34 (आसान). ज़मींदार की आय का मुख्य स्रोत क्या था?
उत्तर – किसानों से वसूल किया गया कर।

प्रश्न 35 (मध्यम). ज़मींदारों के पास सैन्य बल क्यों होता था?
उत्तर – अपनी संपत्ति की रक्षा के लिए, कर वसूली में मदद के लिए, और ग्रामीण इलाकों में अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए।

प्रश्न 36 (कठिन). ज़मींदारों की शक्ति ने मुगल साम्राज्य के साथ उनके संबंधों को कैसे प्रभावित किया होगा?
उत्तर – ज़मींदार राज्य के लिए कर वसूलने का काम करते थे, जिससे वे राज्य के महत्वपूर्ण सहयोगी बनते थे। लेकिन उनकी अपनी सैन्य शक्ति और स्थानीय प्रभाव के कारण, वे कभी-कभी राज्य के लिए चुनौती भी बन सकते थे।

» मुग़ल भू-राजस्व प्रणाली

प्रश्न 37 (आसान). मुग़ल भू-राजस्व प्रणाली में 'जमा' का क्या अर्थ है?
उत्तर – यह वह अनुमानित कर या राजस्व है जो राज्य को किसी क्षेत्र से मिलने की उम्मीद होती थी।

प्रश्न 38 (आसान). मुग़ल भू-राजस्व प्रणाली में 'हासिल' का क्या अर्थ है?
उत्तर – यह वह वास्तविक राजस्व है जो राज्य द्वारा सचमुच में इकट्ठा किया जाता था।

प्रश्न 39 (मध्यम). अगर किसी गाँव का जमा 5000 रुपये था और हासिल 4200 रुपये, तो वसूली में कितने रुपये की कमी हुई?
उत्तर – वसूली में 800 रुपये (5000 - 4200) की कमी हुई।

प्रश्न 40 (कठिन). मुग़ल भू-राजस्व प्रणाली का मुख्य उद्देश्य क्या था और यह मुग़ल साम्राज्य के लिए क्यों महत्वपूर्ण थी?
उत्तर – इसका मुख्य उद्देश्य राज्य के लिए नियमित आय सुनिश्चित करना था। यह साम्राज्य की आर्थिक रीढ़ थी, जिससे सेना का रखरखाव, प्रशासन चलाना और निर्माण कार्य आदि पूरे होते थे।

» चाँदी का बहाव और मुग़ल अर्थव्यवस्था

प्रश्न 41 (आसान). मुग़ल काल में कौन सी धातु भारत में सबसे ज़्यादा बाहर से आई?
उत्तर – चांदी।

प्रश्न 42 (आसान). अंतर्राष्ट्रीय व्यापार बढ़ने का मुगल अर्थव्यवस्था पर क्या असर हुआ?
उत्तर – अर्थव्यवस्था मजबूत हुई।

प्रश्न 43 (मध्यम). मुग़ल काल में चांदी के प्रवाह से कर वसूली में क्या बदलाव आया?
उत्तर – चांदी के सिक्कों की स्थिरता के कारण नकद कर वसूली आसान हो गई, जिससे राज्य को राजस्व इकट्ठा करने में सुविधा हुई।

प्रश्न 44 (कठिन). यूरोपीय व्यापारियों ने भारत से कौन से मुख्य उत्पाद खरीदे और बदले में क्या दिया?
उत्तर – यूरोपीय व्यापारियों ने भारत से मसाले, कपड़े, नील आदि उत्पाद खरीदे और बदले में मुख्य रूप से चांदी दी, जिससे भारत में चांदी का भारी प्रवाह हुआ।

» अबुल फ़ज़ल की आइना-ए-अकबरी: एक ऐतिहासिक स्रोत

प्रश्न 45 (आसान). आइना-ए-अकबरी किसने लिखी थी?
उत्तर – अबुल फ़ज़ल ने।

प्रश्न 46 (आसान). यह किस बादशाह के शासन काल पर आधारित है?
उत्तर – बादशाह अकबर के।

प्रश्न 47 (मध्यम). आइना-ए-अकबरी के किन्हीं दो मुख्य विषयों के बारे में बताएं जो इसमें शामिल हैं।
उत्तर – प्रशासनिक व्यवस्था और राजस्व के स्रोत।

प्रश्न 48 (कठिन). आइना-ए-अकबरी को एक 'ऐतिहासिक स्रोत' के रूप में इसकी प्रमुख सीमाएं क्या थीं?
उत्तर – जोड़ करने में गलतियाँ, सभी सूबों से आंकड़ों का एक समान न होना, और कीमतों व मज़दूरी के आंकड़े केवल राजधानी के आसपास से होना।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मुग़ल काल में 'खुद-काश्त' और 'पाहि-काश्त' किसानों में क्या अंतर था?

› सबसे पहले, हम 'खुद-काश्त' को समझेंगे। यह वो किसान थे जिनकी ज़मीन उसी गाँव में होती थी जहाँ वे रहते थे। वे अपनी ज़मीन के मालिक होते थे और खुद ही उस पर खेती करते थे।

› अब आते हैं 'पाहि-काश्त' पर। ये वे किसान थे जो दूसरे गाँवों में जाकर ठेके पर या किराये पर ज़मीन लेकर खेती करते थे।

› इनके दूसरे गाँव में जाने के कई कारण हो सकते थे – कभी अच्छी पैदावार की उम्मीद में, कभी करों में रियायत पाने के लिए, या कभी-कभी अपने गाँव में सूखे या भुखमरी जैसी आर्थिक परेशानियों के कारण उन्हें मजबूरन दूसरे गाँव जाना पड़ता था।

उत्तर – 'खुद-काश्त' किसान अपनी ज़मीन पर अपने ही गाँव में खेती करते थे, जबकि 'पाहि-काश्त' किसान दूसरे गाँवों में जाकर किराए पर या ठेके पर खेती करते थे।

उदाहरण 2. मान लीजिए एक गाँव में कुएँ से खेत तक पानी पहुँचाना है। रहट प्रणाली कैसे काम करेगी?

› सबसे पहले, कुएँ के ऊपर एक बड़ा पहिया लगाया जाएगा।

› इस पहिये से रस्सी के फंदे बांधे जाएँगे, जिनमें थोड़ी-थोड़ी दूरी पर छोटे घड़े या बाल्टियाँ लगी होंगी।

› अब, इस बड़े पहिये को एक और पहिये से जोड़ा जाएगा, जिसमें दाँते (गियर) होंगे।

› इस दूसरे पहिये को बैल या किसी पशु से घुमाया जाएगा।

› जैसे ही बैल घूमेगा, दाँतों वाला पहिया घूमेगा और बदले में घड़ों वाला बड़ा पहिया भी घूमने लगेगा।

› घड़े कुएँ से पानी भरते जाएंगे और ऊपर आकर एक नाली में खाली करते जाएंगे, जिससे पानी खेतों तक पहुँचेगा।

उत्तर – इस तरह, रहट प्रणाली बैलों की शक्ति का उपयोग करके कुएँ से लगातार पानी निकालती थी और खेतों तक पहुँचाती थी।

उदाहरण 3. मुग़ल काल में 'जिन्स-ए-कामिल' का क्या अर्थ था और इसके दो उदाहरण दीजिए?

› सबसे पहले, समझो कि मुग़ल काल में किसान सिर्फ अपना पेट भरने के लिए ही खेती नहीं करते थे।

› कुछ फसलें ऐसी थीं जिन्हें वे सीधे बाज़ार में बेचकर खूब पैसा कमाते थे और राज्य को भी उनसे ज़्यादा कर मिलता था।

› इन 'सर्वोत्तम फसलों' को ही 'जिन्स-ए-कामिल' कहा जाता था।

› इनके दो मुख्य उदाहरण थे कपास और गन्ना। कपास से कपड़े बनते थे और गन्ने से चीनी।

› तिलहन (जैसे सरसों) और दलहन भी इसमें शामिल थे।

उत्तर – 'जिन्स-ए-कामिल' का अर्थ था 'सर्वोत्तम फसलें', यानी वे फसलें जिन्हें मुख्य रूप से व्यापार और नकद कमाई के लिए उगाया जाता था, क्योंकि इनसे राज्य को भी अधिक कर मिलता था। इसके दो उदाहरण हैं: कपास और गन्ना।

उदाहरण 4. मुग़ल काल में ग्रामीण समुदाय के मुख्य घटक क्या थे और खेतिहर किसानों के बीच सामाजिक भेदभाव का आधार क्या था?

› सबसे पहले, ग्रामीण समुदाय में तीन मुख्य घटक थे: खेतिहर किसान, पंचायत और मुखिया।

› खेतिहर किसान वो थे जो ज़मीन जोतते थे, इनमें 'खुद-काश्त' (अपनी ज़मीन पर खेती करने वाले) और 'पाहि-काश्त' (दूसरे गाँव जाकर ठेके पर खेती करने वाले) शामिल थे।

› पंचायत, गाँव के बड़े-बुजुर्गों की एक सभा थी, जो गाँव के मामलों का निपटारा करती थी।

› मुखिया या मंडल, पंचायत का प्रमुख होता था, जिसे गाँव का सबसे सम्मानित व्यक्ति माना जाता था और वह राज्य और गाँव के बीच की कड़ी था।

› सामाजिक भेदभाव मुख्य रूप से जाति के आधार पर होता था। कुछ जातियाँ ऊँची मानी जाती थीं और उन्हें ज़्यादा अधिकार मिलते थे, जबकि नीची जातियों को कम सम्मान मिलता था और उन्हें ज़्यादा मेहनत वाले काम करने पड़ते थे। संपत्ति का अंतर भी एक बड़ा कारण था, कुछ किसान अमीर थे तो कुछ बहुत गरीब।

› अरे, एक बात और – ग्रामीण समुदाय में कुछ ऐसे लोग भी थे जो ज़मीन नहीं जोतते थे लेकिन खेती से जुड़े काम करते थे, जैसे कुम्हार या बढ़ई, जो किसानों के औज़ार बनाते थे। उन्हें भी जाति के हिसाब से ही स्थान मिलता था।

उत्तर – मुग़ल ग्रामीण समुदाय के मुख्य घटक खेतिहर किसान (खुद-काश्त और पाहि-काश्त), पंचायत और मुखिया थे। खेतिहर किसानों के बीच सामाजिक भेदभाव का आधार जाति और संपत्ति थी।

उदाहरण 5. मुग़ल काल में गाँव के मुखिया 'मंडल' के कोई तीन मुख्य कार्य बताइए।

› पहला कार्य था गाँव की आय और खर्च का हिसाब-किताब अपनी निगरानी में बनवाना। इसमें पटवारी उसकी मदद करता था।

› दूसरा कार्य था गाँव में सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना, खासकर यह देखना कि अलग-अलग जाति के लोग अपनी जाति के नियमों का पालन कर रहे हैं या नहीं। पूर्वी भारत में तो मंडल की मौजूदगी में ही शादियाँ होती थीं।

› तीसरा कार्य था गाँव से जुड़े झगड़ों और विवादों का निपटारा करना। पंचायत को जुर्माना लगाने और किसी को समुदाय से निष्कासित करने तक का अधिकार था।

उत्तर – मंडल के मुख्य कार्य थे गाँव की आय-व्यय का हिसाब रखना, सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना (जैसे जातिगत नियमों का पालन), और झगड़ों व विवादों का निपटारा करना।

उदाहरण 6. मान लीजिए एक किसान को अपने खेत के लिए एक नया हल चाहिए और उसका बैलगाड़ी भी टूट गई है। वह इन कामों के लिए ग्रामीण दस्तकारों से कैसे संपर्क करेगा और भुगतान कैसे करेगा?

› किसान पहले लोहार के पास जाएगा और उसे नया हल बनाने और बैलगाड़ी ठीक करने का काम बताएगा।

› लोहार काम पूरा करेगा।

› भुगतान के लिए, किसान लोहार को फ़सल कटने पर अनाज का एक निश्चित हिस्सा (जैसे 50 किलो गेहूँ) देगा, या हो सकता है कि उसने पहले से ही लोहार को खेती के लिए एक छोटा-सा ज़मीन का टुकड़ा दे रखा हो जिसकी उपज लोहार की हो।

› यह संबंध अक्सर 'जजमानी व्यवस्था' के तहत होता था, जहाँ यह लेन-देन पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहता था।

उत्तर – किसान दस्तकारों को सेवाओं के बदले नगद पैसे की जगह, अनाज या ज़मीन के रूप में भुगतान करेगा, जिससे एक स्थायी लेन-देन का रिश्ता बनेगा।

उदाहरण 7. सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में कृषि उत्पादन में महिलाओं की मुख्य भूमिकाएँ क्या थीं?

› पहला कदम: सोचना कि खेती के कौन-कौन से काम होते हैं, जैसे बुवाई, कटाई, सिंचाई।

› दूसरा कदम: उन कामों को पहचानना जिनमें महिलाओं की शारीरिक मेहनत और कौशल की ज़रूरत होती थी।

› तीसरा कदम: ये समझना कि वे सिर्फ खेतों में ही नहीं, बल्कि कृषि से जुड़े अन्य कामों में भी शामिल थीं, जैसे अनाज को साफ करना या तेल निकालना।

उत्तर – महिलाएँ खेतों में बुवाई, निराई और कटाई जैसे महत्वपूर्ण कामों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। इसके अलावा, वे धागा कातना, बर्तन बनाना और तेल निकालना जैसे कृषि-आधारित उद्योगों में भी शामिल थीं।

उदाहरण 8. सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में 'जंगली' शब्द का क्या अर्थ था और वे अपने जीवन यापन के लिए मुख्यतः किन गतिविधियों पर निर्भर थे?

› पहले समझेंगे कि 'जंगली' शब्द का उस समय क्या मतलब था। यह आज के 'जंगली' से अलग था, जिसका अर्थ 'असभ्य' है। उस समय इसका मतलब था 'जंगलों में रहने वाले लोग'।

› फिर देखेंगे कि वे अपनी रोज़ी-रोटी कैसे चलाते थे। वे जंगल से फल, शहद जैसे उत्पाद इकट्ठा करते थे।

› वे शिकार करते थे, जैसे हिरण या मछली।

› कुछ जगहों पर वे स्थानांतरीय खेती (झूम खेती) भी करते थे, जहाँ वे एक जगह खेत साफ़ करके खेती करते, फिर कुछ साल बाद दूसरी जगह चले जाते।

उत्तर – सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में 'जंगली' शब्द का अर्थ था 'वे लोग जिनका गुज़ारा जंगल के उत्पादों, शिकार और स्थानांतरीय खेती से होता था।' वे मुख्यतः जंगल के उत्पाद इकट्ठा करने, शिकार करने और झूम खेती पर निर्भर थे।

उदाहरण 9. मान लीजिए एक ज़मींदार के पास 500 बीघा ज़मीन है। वह किसानों से कर वसूलता है और उसके पास 20-25 armed सिपाही भी हैं। ग्रामीण समाज में उसकी शक्ति का विश्लेषण कीजिए।

› पहला कदम: उसकी 'मिल्कियत' यानी अपनी ज़मीन का आकार देखिए। 500 बीघा ज़मीन होना उसे आर्थिक रूप से बहुत मज़बूत बनाता है, जो उसकी शक्ति का आधार है।

› दूसरा कदम: कर वसूलने की शक्ति। यह शक्ति उसे सीधे राज्य से मिलती थी, और इससे उसकी आय भी बढ़ती थी और गाँव पर उसका नियंत्रण भी मजबूत होता था।

› तीसरा कदम: सैन्य बल। 20-25 armed सिपाही का मतलब है कि उसके पास अपनी एक छोटी सेना है। यह उसे अपनी संपत्ति की रक्षा करने, विद्रोहों को कुचलने और अपने आदेशों को लागू करने की क्षमता देता है।

› चौथा कदम: इन तीनों कारकों को मिलाकर, वह ग्रामीण समाज में एक 'प्रभुत्वशाली' स्थिति में है। वह सिर्फ एक ज़मीन मालिक नहीं, बल्कि एक स्थानीय शासक जैसा था जो कानून और व्यवस्था को भी कुछ हद तक नियंत्रित करता था।

उत्तर – यह ज़मींदार आर्थिक, प्रशासनिक और सैन्य रूप से बहुत शक्तिशाली है, जो उसे ग्रामीण समाज में एक केंद्रीय और प्रभावशाली व्यक्ति बनाता है।

उदाहरण 10. मान लीजिए एक मुग़ल गाँव में 'जमा' (निर्धारित भू-राजस्व) 10,000 रुपये तय किया गया है। लेकिन अकाल के कारण फसल कम हुई और 'हासिल' (वास्तविक वसूली) सिर्फ 6,500 रुपये हो पाया। बताइए, किसानों ने कितना कम राजस्व दिया और राज्य को कितने का घाटा हुआ?

› सबसे पहले हमें 'जमा' और 'हासिल' की रकम देखनी है।

› निर्धारित भू-राजस्व (जमा) = 10,000 रुपये।

› वास्तविक वसूली (हासिल) = 6,500 रुपये।

› कम राजस्व = जमा - हासिल

› कम राजस्व = 10,000 - 6,500 = 3,500 रुपये।

› तो किसानों ने 3,500 रुपये कम राजस्व दिया और राज्य को इतने का ही घाटा हुआ।

उत्तर – किसानों ने 3,500 रुपये कम राजस्व दिया, जिससे राज्य को 3,500 रुपये का घाटा हुआ।

उदाहरण 11. मुग़ल काल में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार बढ़ने से भारत पर क्या आर्थिक प्रभाव पड़ा?

› सबसे पहले, 16वीं-17वीं सदी में भारत से गरम मसाले, कपड़े, नील जैसे उत्पाद विदेशों में खूब बिके।

› दूसरा, यूरोप के व्यापारी इन उत्पादों को खरीदने के बदले भारत में भारी मात्रा में चांदी लाए।

› तीसरा, इस चांदी के प्रवाह से मुग़ल साम्राज्य में चांदी के सिक्कों, यानी चांदी के रुपयों का प्रचलन बढ़ा और वे स्थिर हो गए।

› चौथा, धातु मुद्रा की स्थिरता ने मुग़ल राज्य को किसानों से नकद (पैसों में) कर वसूलना आसान बना दिया।

› अंत में, इस पूरे सिस्टम से मुग़ल अर्थव्यवस्था बहुत मजबूत हुई और व्यापारिक गतिविधियाँ तेज़ हुईं।

उत्तर – अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि से भारत में भारी मात्रा में चांदी का प्रवाह हुआ, जिससे चांदी के रुपयों का प्रचलन बढ़ा, मुद्रा व्यवस्था स्थिर हुई और नकद कर वसूली आसान होने से मुग़ल अर्थव्यवस्था बहुत मजबूत हुई।

उदाहरण 12. आइना-ए-अकबरी को एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में इसके महत्व और सीमाओं का वर्णन करें।

› पहले महत्व बताएं: यह अकबर के प्रशासन, सैन्य व्यवस्था, राजस्व प्रणाली, प्रांतों के भूगोल और लोगों के सांस्कृतिक रीति-रिवाजों की विस्तृत जानकारी देता है। यह मुग़ल साम्राज्य की संरचना और कामकाज को समझने में मदद करता है।

› फिर इसकी सीमाओं पर चर्चा करें: इसमें जोड़ करने में छोटी-मोटी गलतियाँ पाई गई हैं। सभी सूबों से आंकड़े एक ही रूप में एकत्रित नहीं किए गए, जैसे बंगाल और उड़ीसा के लिए ज़मींदारों की जाति की विस्तृत जानकारी नहीं है। कीमतों और मज़दूरी के आंकड़े केवल आगरा और उसके आसपास के क्षेत्रों के हैं, पूरे साम्राज्य के नहीं।

› अंत में निष्कर्ष दें कि इन सीमाओं के बावजूद, यह अपने समय का एक असामान्य और अद्वितीय दस्तावेज है।

उत्तर – आइना-ए-अकबरी मुग़ल साम्राज्य के प्रशासन, सेना, राजस्व, भूगोल और सांस्कृतिक रिवाजों का एक विस्तृत और अमूल्य स्रोत है, लेकिन इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं जैसे आंकड़ों में कुछ त्रुटियाँ और विषमताएँ, खास तौर पर क्षेत्रीय जानकारी और कीमतों के संदर्भ में।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा में छोटे उत्तर वाले प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है, खासकर 'खुद-काश्त' और 'पाहि-काश्त' के अंतर पर। इसे ध्यान से समझो!

• यह भाग बोर्ड परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है। विशेषकर, 'रहट' और 'बाल्टी' वाले सिंचाई के तरीकों का वर्णन अक्सर पूछ लिया जाता है। इनकी कार्यप्रणाली को अच्छे से समझना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'जिन्स-ए-कामिल' और 17वीं सदी में आई नई फसलों के बारे में प्रश्न अक्सर आते हैं। इनके उदाहरण और महत्व को ध्यान से याद कर लेना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! ग्रामीण समुदाय के घटकों और जाति तथा संपत्ति के आधार पर हुए भेदभाव को उदाहरणों सहित समझकर लिखना सीखो, सीधा प्रश्न आता है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर मुखिया और पंचायत के कार्यों पर सीधा प्रश्न आता है, इसलिए इनके कार्य और चुनाव प्रक्रिया को अच्छे से याद कर लें।

• जजमानी व्यवस्था पर अक्सर छोटा या विस्तृत प्रश्न आता है, इसके महत्व और भुगतान के तरीकों को अच्छे से समझकर जाना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज के एक बड़े हिस्से – महिलाओं – की भूमिका पर प्रकाश डालता है। उनकी कृषि में भागीदारी, अधिकारों की स्थिति और लैंगिक पूर्वाग्रहों को समझकर उत्तर देना चाहिए।

• इस टॉपिक से 'जंगली' शब्द का अर्थ और उनकी जीवनशैली पर प्रश्न ज़रूर आते हैं। राज्य के साथ उनके जटिल संबंधों को भी अच्छे से समझना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। ज़मींदारों की भूमिका और उनकी शक्तियों पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, खासकर 'मिल्कियत' और उनकी सैन्य शक्ति के बारे में।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर पूछा जाता है। 'जमा' और 'हासिल' के अंतर को उदाहरण सहित समझाना और इस प्रणाली के महत्व को बताना बहुत ज़रूरी है।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'चांदी का बहाव और मुग़ल अर्थव्यवस्था' के आपसी संबंध पर अक्सर सीधा प्रश्न आता है। इसे अच्छे से समझकर जाना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आइना-ए-अकबरी के महत्व और सीमाओं, दोनों पर प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं, इसलिए इसके हर पहलू को अच्छे से समझकर जाना।

एक नज़र में रिवीज़न

› मुग़ल काल के किसान: खुद-काश्त (अपनी ज़मीन), पाहि-काश्त (किराए पर); मुख्य फसलें: चावल, गेहूँ।
› मुग़ल काल में रहट, बाल्टी, हल, बरमा प्रमुख सिंचाई व कृषि तकनीकें थीं।
› मुग़ल काल: खरीफ, रबी फसलें, जिन्स-ए-कामिल (कपास, गन्ना), नई फसलें (तम्बाकू, मक्का, आलू)।
› मुग़ल ग्रामीण समाज: किसान (खुद-काश्त, पाहि-काश्त), पंचायत, मुखिया, जातिगत/संपत्तिगत भेदभाव।
› पंचायत: बुज़ुर्गों का समूह; मुखिया (मुक़द्दम/मंडल): आय-व्यय, न्याय, सामाजिक व्यवस्था.
› दस्तकार: गाँव की सेवाएँ, फ़सल/ज़मीन में भुगतान, जजमानी व्यवस्था।
› महिलाएँ कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण, पर संपत्ति अधिकार सीमित थे।
› जंगली: जंगल पर निर्भर, गतिशील जीवन, राज्य से विविध संबंध।
› ज़मींदार = ज़मीन मालिक + कर वसूलने वाला + सैन्य बल + ग्रामीण सत्ता
› मुग़ल भू-राजस्व: जमा (निर्धारित), हासिल (वास्तविक वसूली) साम्राज्य की रीढ़।
› अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से चांदी आई, मुग़ल अर्थव्यवस्था मजबूत हुई, नकद कर वसूली बढ़ी।

› आइना-ए-अकबरी: अकबर का विस्तृत प्रशासनिक-ऐतिहासिक ग्रंथ, अबुल फ़ज़ल द्वारा रचित, मुग़ल साम्राज्य का प्रमुख स्रोत।